2

चुनौती सबको साथ लेकर चलने की

अक्षय कुमार दीक्षित*

कविता जी एक सरकारी स्कूल की अध्यापिका हैं। हर बच्चे पर वे व्यक्तिगत रूप से ध्यान देती हैं। लेकिन आज वे कुछ गहरे चिंतन में डूबी हुई हैं। उनकी कक्षा में एक ऐसे बच्चे ने दाखिला लिया है जो स्पष्ट रूप से मानसिक मंदता से ग्रस्त है। वे सोच रही हैं कि, 'मैं इस बच्चे को कैसे पढ़ाऊँगी! मुझे विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को पढ़ाने के बारे में तो शिक्षण-प्रशिक्षण में भी नहीं सिखाया गया था। क्या मुझे इस बच्चे को बाकी बच्चों के साथ ही पढ़ाना है या अलग से पढ़ाना है? अलग से पढ़ाने के लिए मैं समय कहाँ से लाऊँगी?'

ऐसे ही और भी कई सवाल उनके दिमाग में घूम रहे थे। ये सवाल केवल कविता जी के नहीं हैं बल्कि हर उस शिक्षक के हैं जिनकी कक्षा में विशेष क्षमताओं/चुनौतियों/ज़रूरतों वाले बच्चे होते हैं। हो सकता है कि किसी को यह लगता हो कि ऐसे बच्चे पूरे स्कूल में मुश्किल से दो–चार ही तो होते हैं। उनके बारे में इतनी फ़िक्र करने की ज़रूरत ही क्या है! लेकिन सच्चाई यह है कि लगभग हर कक्षा में ऐसे बच्चे मौजूद होते हैं जिन्हें बाकी बच्चों की तुलना में विशेष ध्यान देने की ज़रूरत होती है। लेकिन कई बार शिक्षक को पता नहीं होता कि उनकी कक्षा में ऐसे बच्चे मौजूद हैं और अगर पता हो भी तो उन्हें यह अंदाज़ा नहीं होता कि विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के साथ किस तरह काम किया जाए, उन्हें बाक़ी कक्षा के साथ लेकर किस तरह चला जाए। साथ ही यह समझना भी ज़रूरी है कि भले ही विशेष बच्चों की संख्या न के बराबर हो, ऐसे प्रत्येक बच्चे को भी समानता और सीखने का उतना ही अधिकार है जितना उसके आसपास के अन्य बच्चों को है।

इस बात में कोई शक नहीं कि यह बहुत संवेदनशील और बड़ा मसला है। जिन कक्षाओं में विशेष ज़रूरतों वाले बच्चे होते हैं, उन कक्षाओं के अध्यापक चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते और तरह-तरह की दिक्कतों का सामना करते हैं। वे चाहते तो हैं कि विशेष बच्चों को भी कक्षा के रोज़मर्रा के क्रियाकलापों में बराबर की हिस्सेदारी दी जाए लेकिन विशेष बच्चों की विशेष चुनौतियाँ उन्हें परेशानी में डाल देती हैं।

ऐसे में कई बार शिक्षक कक्षा में विशेष क्षमताओं/चुनौतियों वाले बच्चों के होने पर बहुत सरल गतिविधियों को उनके लिए चुन लेते हैं और बाकी

* *शिक्षा सलाहकार,* सी–633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छतरपुर एक्सटेंशन, नयी दिल्ली

कक्षा के लिए सामान्य कार्य रख लेते हैं। इस प्रवृत्ति को सही नहीं कहा जा सकता क्योंकि ऐसा करने पर कक्षा में भेदभाव बढ़ने और बालकों में खुद को दूसरों से बेहतर या कमतर आँकने की सोच पनप सकती है। इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि कक्षा के सभी बच्चों को समान गतिविधि दी जाएँ और उन्हीं गतिविधियों में विशेष क्षमता वाले बच्चों को इस तरह शामिल किया जाए कि उन्हें अपनी वास्तविक क्षमताओं का इस्तेमाल करते हुए कुछ सार्थक हासिल करने का वास्तविक एहसास हो।

कभी-कभी ऐसा होता है कि शिक्षक विशेष योग्यता वाले बच्चों से संबंधित गतिविधियाँ करवाते हुए कक्षा के बाकी बच्चों को उनकी तरह काम करने के लिए मज़बूर करना शुरू कर देते हैं। उदाहरण के लिए, आँखें बंद करना, एक पैर से चलना आदि। ऐसा करने के बजाय, गतिविधियाँ ऐसी हों जो कक्षा के हर बच्चे के लिए हों, बिना उनका कठिनाई स्तर गिराए। उन गतिविधियों में कृत्रिम विकलांगता उत्पन्न करने के बजाए ऐसे काम सोचे गए हों जो हर क्षमता का बालक अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बराबरी की भावना के साथ कर सकता है।

क्या ऐसा संभव है?

यकीनन सभी गतिविधियाँ ऐसी नहीं होती हैं जिन्हें सभी बच्चे कर सकें, लेकिन अगर हम अपनी कक्षा के बच्चों की ज़रूरतों के हिसाब से गतिविधियों को ढाल लें तो काफ़ी हद तक हम सबको समान अवसर दे सकेंगे। इस काम के दो चरण हैं —

1. ऐसी गतिविधि चुनना जो हमारी कक्षा के लिहाज़ से उपयुक्त हो।
2. ज़रूरत पड़े तो उस गतिविधि को इस तरह से परिवर्तित कर लेना ताकि कक्षा का हर बच्चा उससे लाभ उठा सके।

उदाहरण के लिए, लता जी अपनी कक्षा में रस्साकशी के खेल का आयोजन करवाना चाहती हैं। लेकिन उनकी चिंता यह है कि उनकी कक्षा में लक्ष्मी नाम की लड़की भी है जिसका एक हाथ जन्म से विकृत है। वह दोनों हाथों से रस्सी पकड़ ही नहीं सकेगी। तो उन्होंने रस्साकशी के खेल को थोड़ा बदल लिया। उन्होंने रस्सी को खेल से हटा दिया और बच्चों की दो टोलियाँ बना दीं। दोनों टोलियों के बच्चों को एक-दूसरे की कमर पकड़कर ज़ोर लगाना था। लता जी को पता था कि लक्ष्मी भले ही रस्सी ना पकड़ पाए लेकिन अपने एक हाथ को दूसरे से कसके पकड़ सकती है।

यह तो हुई शारीरिक चुनौती वाले बच्चों की बात। लेकिन कक्षा में ऐसे बच्चे भी होते हैं जो मानसिक चुनौतियों का मुकाबला कर रहे होते हैं। इनमे मंद बुद्धि बच्चे भी शामिल हैं, डिस्लेक्सिया से ग्रस्त बच्चे भी शामिल हैं और मानसिक रूप से अक्षम बच्चे भी शामिल हैं।

मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के साथ कार्य करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों के मुकाबले धीमी गति से विकसित होते हैं। अगर उन्हें ऐसे जटिल काम करने के लिए कहा जाए जिसमें कई चरण हों तो उन्हें दिक्कत होती है। इसलिए उनके बौद्धिक स्तर के अनुसार गतिविधियों को चुनने की ज़रूरत पड़ सकती है। कक्षा में आप जो भी गतिविधि करवाएँ, बच्चों को स्पष्ट निर्देश दें।

Chapters- PS-July2016.indd 13 22-08-2017 AM 10:00:58

एक बार में एक चरण बताएँ। इससे उन्हें थोड़ी आसानी होगी। उन्हें ऐसी गतिविधियाँ करने के लिए कहा जा सकता है जिनके ज़रिए वे खुद को अभिव्यक्त कर सकें। कलात्मक गतिविधियाँ मानसिक रूप से अक्षम बच्चों को ऐसा रास्ता देती हैं जिस पर चलकर वे सफ़लता खोज सकते हैं।

विशेष क्षमताओं वाले बच्चों की शिक्षा में खेल एक विशेष भूमिका निभाते हैं। खेल बच्चों और बड़ों को न सिर्फ़ रोज़मर्रा की एकरसता से निजात दिलाते हैं बल्कि उनके जीवन कौशलों और सामाजिक कौशलों को विकास और मज़बूती प्रदान करते हैं। कक्षा में खेलों को रोज़मर्रा की गतिविधियों के तौर पर शामिल करना बहुत लाभदायक होता है। खेलों में हिस्सा लेकर विशेष क्षमताओं वाले बच्चे खुद को और अधिक सृजनात्मक रूप में अभिव्यक्त कर सकेंगे। लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा है, ऐसी गतिविधियाँ सोचना जिनमें सभी बच्चे समान रूप से भाग ले सकें, आसान नहीं होता। इसलिए हमने ऐसी कुछ गतिविधियाँ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की हैं।

1. मोमी रंगों से छाप बनाना

इस गतिविधि से बच्चों की बड़ी माँसपेशियों एवं सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास में सहायता मिलती है।

इस गतिविधि में बच्चे अलग-अलग तरह की सतहों पर कागज़ रखकर उसके ऊपर मोमी रंगों को रगड़ते हैं। उदाहरण के लिए, पत्तियाँ, कपड़े, रेगमाल (सैंड पेपर) या कक्षा में उपलब्ध कोई भी खुरदरी सतह। प्लास्टिक की जालियाँ, पत्थर के टुकड़े, बोतलों के ढक्कन, सिक्के आदि चीज़ें बहुत सुंदर छाप छोड़ती हैं।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् बच्चे —

- बड़े समूह में मिलकर काम कर सकेंगे।
- रंगों को मिलाना, रंग भर सकेंगे।
- दूसरों की बातों को सुन सकेंगे।
- अपनी बातें कह सकेंगे।
- अवलोकन कर सकेंगे।

सामग्री

- कागज़, मोमी रंग, खुरदरी सतह वाली चीज़ें, टेप, आदि।

तरीका

इस गतिविधि के लिए आप बच्चों के समूह बना सकते हैं। हर समूह में अलग-अलग रंगों के मोमी रंग दे दें। समूहों को सफ़ेद कागज़ भी दे दें। उन्हें खुद अलग-अलग चीज़ों को चुनकर उनकी छाप बनाने दें। छाप बनाने से पहले उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे बताएँ कि वह चीज़ उन्हें कैसी महसूस हो रही है। अगर ज़रूरत पड़े तो एक हाथ से कागज़ पकड़कर उस पर मोमी रंग को कैसे चलाना है, यह बताते हुए उन्हें छाप बनाकर दिखाएँ। कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिनके लिए कागज़ को एक जगह पर सँभाले रखना मुश्किल हो। ऐसे बच्चों के लिए कागज़ को टेप से चिपका दें।

ध्यान दें

कोई भी गतिविधि बिना उसके बारे में बात किए पूरी नहीं होती। इस गतिविधि में भी बच्चों की बातचीत बहुत ज़रूरी है। बच्चों की कलाकृतियों को कक्षा में उचित जगह पर प्रदर्शित करें और उनके बारे में बातचीत करें। एक खेल भी करवाया जा सकता है

Chapters- PS-July2016.indd 14 22-08-2017 AM 10:00:59

जिसमें बच्चे छाप को देखकर अंदाज़ा लगाएँगे कि वह किस चीज़ की छाप है।

2. हमारा पेड़

इस गतिविधि में बच्चे मिलकर अलग-अलग आकार की पट्टियाँ काटेंगे और उनको चिपकाकर एक पेड़ बनाएँगे। इस गतिविधि को किसी भी आयु के बच्चे कर सकते हैं। इस गतिविधि को किसी भी तरह की चुनौती वाले बच्चों के हिसाब से आसानी से ढाला जा सकता है। यही इस गतिविधि की खूबसूरती भी है कि इसमें कक्षा का हर एक बच्चा हिस्सा ले सकता है। इस गतिविधि में इस बात का भी कोई दबाव नहीं है कि बिलकुल एक जैसी पट्टियाँ बनानी हैं या लकीरों का ध्यान रखना है। इस गतिविधि को ऐसे बच्चे भी कर सकते हैं जिनकी नज़र या 'मोटर स्किल' बहुत सीमित है।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् बच्चे —

- बड़े समूह में मिलकर काम कर सकेंगे।
- रंगों को मिला एवं रंग भर सकेंगे।
- दूसरों की बातों को सुन सकेंगे।
- अपनी बातें कह सकेंगे।
- अवलोकन कर सकेंगे।

सामग्री — आप निम्नलिखित चीज़ों का या इनके किसी भी आसान विकल्प का प्रयोग कर सकते हैं — फ्लैट टिप वाले मार्कर, क्रेयोन, कैंची, टेप, पत्ती का नमूना, तने के लिए कोई वस्तु जैसे कपड़ा, अखबार या कागज़ के लिफ़ाफ़े आदि, पत्तियाँ बनाने के लिए सफ़ेद या रंगीन कागज़, आदि।

तरीका

सबसे पहले बच्चे कागज़ पर पत्तियों को बनाकर उनमें रंग भरेंगे। पत्तियाँ किसी भी आकार की हो सकती हैं और उन्हें इस बात की भी चिंता नहीं करनी कि रंग बाहर तो नहीं निकल रहा है क्योंकि बाद में सभी पत्तियों को काटा जाना है। अगर बच्चे रंगीन या किसी पत्रिका के कागज़ इस्तेमाल कर रहे हैं तो उस पर फिर से रंग करने की ज़रूरत नहीं है। इसके बाद सभी बच्चे मिलकर पत्तियों को काटेंगे। जो बच्चे कैंची का प्रयोग नहीं कर सकते, वे हाथों से भी पत्तियाँ फाड़ सकते हैं। यह काम रंग भरने के साथ-साथ किया जा सकता है। कुछ बच्चे रंग भरें, और कुछ बच्चे उन्हें पत्ती के आकार में काटते रहें।

इसके साथ ही एक टोली तना बनाने का काम भी कर सकती है। तना किसी कागज़ के लिफ़ाफ़े, भूरे कागज़ या कपड़े का बनाया जा सकता है। इसे किसी दीवार पर टेप की सहायता से चिपका दें। चिपकाने के लिए गोंद से बेहतर टेप है क्योंकि इससे ज़रूरत पड़ने पर बिना दीवार को बदरंग किए पेड़ को उतारा जा सकता है। आप या तो डबल साइड वाली टेप का इस्तेमाल कर सकते हैं या साधारण टेप का लूप बनाकर उससे तना चिपका सकते हैं।

इसके बाद सभी बच्चे पत्तियों को तने के ऊपर इस तरह चिपकाएँगे कि पेड़ तैयार हो जाए। कौन-सी पत्ती कहाँ लगानी है, इसका फैसला पूरी तरह बच्चे मिलकर करेंगे। पेड़ को जितना चाहे उतना विशाल बनाया जा सकता है।

ध्यान दें

किसी भी अन्य गतिविधि की तरह इस गतिविधि में भी पेड़ कैसा बना है, यह उतना महत्त्व नहीं रखता

Chapters- PS-July2016.indd 15 22-08-2017 AM 10:00:59

जितना कि यह बात कि बच्चों ने पेड़ कैसे बनाया है। दूसरे शब्दों में कहें तो उत्पाद के बजाए प्रक्रिया ज़्यादा महत्वपूर्ण है। इसलिए एक शिक्षक के रूप में आपको ध्यान देना होगा कि बच्चे मिलकर काम करें, एक-दूसरे के साथ सहयोग करें, दूसरों को इज़्ज़त दें, वे क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं, इस बारे में वे बात करें।

3. समस्या सुलझाओ

ऐसे खेल या गतिविधियाँ जिनमें बच्चे किसी समस्या का समाधान खोजते हैं या मिलकर कोई नयी चीज़ बनाते हैं, उनमें समस्या-समाधान का कौशल विकसित करती हैं। समस्या ऐसी होनी चाहिए जो उनकी उत्सुकता जगाए, उन्हें चुनौती प्रदान करे लेकिन बहुत कठिन भी ना हो। शुरुआत में उन्हें चित्रों के टुकड़े जोड़ने जैसी गतिविधियाँ दी जा सकती हैं। एक और गतिविधि का उदाहरण है कक्षा में उपलब्ध चीज़ों की सहायता से एक रैंप बनाना।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् बच्चे —

- रैंप बना सकेंगे।
- चीज़ों के वैकल्पिक उपयोगों की खोज कर सकेंगे।
- मिलकर काम कर सकेंगे।
- अवलोकन कर सकेंगे।

सामग्री

कक्षा में आसानी से उपलब्ध वस्तुएँ।

तरीका

बच्चों के साथ रैंप के बारे में बात करें या उनके सामने कोई समस्या प्रस्तुत करें। उदाहरण के लिए, "मेरा भाई कल अपनी बाइक सड़क पर खड़ी ना करके घर के बरामदे पर खड़ी करना चाहता था। लेकिन सड़क से चबूतरे पर जाने के लिए 3 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। मेरे भाई ने बाइक को सीढ़ियों से ऊपर चढ़ाने के लिए बहुत ज़ोर लगाया लेकिन बाइक ऊपर नहीं चढ़ी। फिर मैंने उसे एक तरकीब बताई। मेरी तरकीब से बाइक झट से ऊपर आ गई। बताओ, मैंने कौन-सी तरकीब बताई होगी?"

बच्चे कई तरकीबें बता सकते हैं जिनमें एक तरकीब होगी रैंप का इस्तेमाल।

इसके बाद आप कक्षा में समूह बनाकर रैंप बनाने का खेल करवा सकती हैं।

इसके लिए आप सबसे पहले बच्चों को बताइए, "अब हम एक खेल खेलेंगे। आप सबको अपने आसपास मौजूद सामान का उपयोग करके एक रैंप बनाना है। जो समूह/बच्चे सबसे पहले रैंप बना लेंगे, वे जीत जाएँगे।"

इस खेल को दो तरीकों से करवाया जा सकता है। अगर बच्चे बहुत छोटे हैं तो उन्हें सुझाव दिया जा सकता है कि वे किन-किन चीज़ों का इस्तेमाल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, फट्टे, कॉपियाँ, स्केल, जूते आदि। अगर आप चाहती हैं कि बच्चे खुद लीक से हटकर सोचें और खोज करें तो इसके लिए बच्चों को कोई सुझाव न दें।

ध्यान दें

रैंप के उपयोगों के बारे में बात करें। बच्चे अनेक उपयोग बता सकते हैं जैसे — कार पार्किंग के लिए, फिसलपट्टी के लिए, पहिया कुर्सी के लिए, अस्पतालों में स्ट्रेचर के लिए, भारी सामान ट्रक में चढ़ाने के लिए आदि। लगे हाथों आप विशेष क्षमता वाले बच्चों के प्रति बच्चों में सम्मान और उनकी ज़रूरतों के प्रति

Chapters- PS-July2016.indd 16 22-08-2017 AM 10:00:59

संवेदनशीलता का भाव भी विकसित कर सकते हैं लेकिन इसे बहुत सहजता से करना होगा, जैसे हम रोज़मर्रा की बातचीत करते हैं।

4. नाम बताना

गोल दायरे या घेरे में और जोड़ों में खेले जाने वाले खेल बच्चों को चर्चा करने और बातचीत करने के लिए प्रेरित करते हैं और इस तरह उनके सामाजिक कौशलों को विकसित करने के अवसर देते हैं।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् बच्चों का —

- मेलजोल बढ़ सकेगा।
- बच्चे आत्मविश्वासपूर्वक अपना परिचय दे सकेंगे।

सामग्री

एक गेंद या कपड़ा

तरीका

कक्षा के शुरूआती दिनों में नाम पूछने की इस गतिविधि को करवा सकते हैं। इसे थोड़ा रोचक बनाने के लिए एक गेंद ले लें। सभी बच्चे और आप एक घेरे में बैठ जाइए। अपने हाथ में गेंद पकड़ें और अब अपना नाम बताइए। नाम बताने के बाद गेंद किसी दूसरे बच्चे की तरफ हलके से उछाल दीजिए। अब उससे पूछिए, "तुम्हारा नाम क्या है?" वह अपना नाम बताकर गेंद को आगे बढ़ा देगा।

ध्यान दें

आप चाहें तो गेंद के बजाए किसी कपड़े या चाक का भी प्रयोग कर सकते हैं। इस गतिविधि से विशेष चुनौती वाले बच्चों के ही नहीं बल्कि सभी बच्चों के आपसी मेलजोल और आत्मविश्वास में इज़ाफ़ा होगा।

5. अंतर बताओ

इस गतिविधि में बच्चे अपने सामने बैठे बच्चे को ध्यान से देखकर पता लगाएँगे कि उसने खुद में कौन-सा बदलाव किया है।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् बच्चों का —

- मेलजोल बढ़ा सकेंगे।
- अवलोकन कर सकेंगे।

सामग्री

किसी सामग्री की ज़रूरत नहीं है।

तरीका

इस गतिविधि को जोड़ों में भी किया जा सकता है और गोल दायरे में भी। सभी बच्चे और आप एक घेरे में बैठ जाइए। एक बच्चा आँखें बंद कर लेगा या नज़रें घुमा लेगा। उसके सामने बैठा बच्चा खुद के कपड़ों, बालों या नज़र आने वाली किसी एक चीज़ में बदलाव करेगा। अब जिस बच्चे ने आँखें बंद कर रखी थीं, वह आँखें खोलकर पता लगाएगा कि उसके सामने बैठे बच्चे ने क्या एक बदलाव किया है। सही उत्तर देने पर उसे 10 अंक मिल जाएँगे। इस गतिविधि में आँखें बंद करने या नज़रे घुमाने के लिए आप कुछ सेकंड का समय रख सकते हैं ताकि खेल में सक्रियता बनी रहे।

ध्यान दें

इस गतिविधि को बाद में थोड़ा और जटिल बनाया जा सकता है। बच्चों के सामने कुछ वस्तुओं को रख दें। आप उसी बच्चे के बस्ते का सामान रख सकते हैं। निर्धारित समय तक उसे सामान देखने के लिए कहें इसके बाद उसकी आँखें बंद करके कोई एक वस्तु को

Chapters- PS-July2016.indd 17 22-08-2017 AM 10:00:59

हटा दें। अब बच्चा सारे सामान को देखकर बताएगा कि कौन-सा सामान गायब है।

6. संगीत और नृत्य के खेल

जिन खेलों में लय, ताल और गति शामिल होती है, ऐसे खेलों का उपयोग करके बच्चों में संगीत, गत्यात्मक और स्थान संबंधी कुशलताओं का विकास किया जा सकता है।

उद्देश्य

गतिविधि पूर्ण करने के पश्चात् —

- बच्चा मिलकर कार्य कर सकेगा।
- बच्चा ध्यानपूर्वक सुन सकेगा।
- बच्चा निर्देशों को समझ सकेगा।

सामग्री

किसी सामान की ज़रूरत नहीं है।

तरीका

'राजा का आदेश' नामक खेल कक्षा के 'सभी' बच्चों को अलग-अलग तरह से गति करने का अवसर प्रदान करता है। इस खेल में एक प्रतिभागी राजा की भूमिका निभाता है। वह बाकी प्रतिभागियों को कुछ कार्य करने का आदेश देता है। उदाहरण के लिए, "राजा का आदेश है कि अपना एक हाथ ऊपर उठाओ।" खिलाड़ियों को वही आदेश मानना है जिसकी शुरुआत 'राजा का आदेश है' से हो। जिस आदेश के साथ यह बात नहीं जुड़ी होगी, उस समय बच्चों को स्थिर रहना है अन्यथा वे खेल से बाहर माने जाएँगे। जो खिलाड़ी अंत तक टिके रहेंगे, उन्हें विजेता घोषित किया जाएगा।

ध्यान दें

अलग-अलग तरह से तालियाँ बजाने/बजवाने के ज़रिए भी बच्चों को लय-ताल की समझ बढ़ाने में मदद की जा सकती है।

'रुको नाचो' गतिविधि भी बच्चों की संगीत और नृत्य संबंधी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को विकसित करने में सहायता दे सकती है। इसमें बच्चों को तब तक नाचना (या कोई शारीरिक गति करना) होगा जब तक संगीत बजना बंद नहीं हो जाता। संगीत बजते ही उन्हें जिस भी अवस्था में वे हैं, उसी अवस्था में बने रहना है।

ऐसी कविताएँ और गाने गाइए जिनमें बच्चों को ज़्यादा हिलने-डुलने का मौका मिले। उदाहरण के लिए, 'लकड़ी की काठी' गाना। जहाँ तक हो सके बच्चों को अधिक से अधिक विकल्प दीजिए। उदाहरण के लिए, "किसी जानवर के चलने की एक्टिंग करो।" या "किसी भी गाने पर नाचो।"

पाठ्यपुस्तक की कविताओं को भी उपरोक्त गतिविधियों के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है।

Chapters- PS-July2016.indd 18 22-08-2017 AM 10:00:59